ज्योतिष भूषण
लक्ष्मीनारायण शर्मा

# अनिष्ट ग्रह ज्योतिष

## कारण व निवारण

**शास्त्र-सम्मत अचूक व अनुभूत उपायों की आसान पुस्तक**

शास्त्र-सम्मत अचूक व अनुभूत उपायों की आसान पुस्तक

# अनिष्ट ग्रह ज्योतिष

## कारण व निवारण


लेखक

**ज्योतिष भूषण**

**लक्ष्मी नारायण शर्मा**



वी एण्ड एस पब्लिशर्स

**प्रकाशक**

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
*E-mail:* info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

**शाखाः हैदराबाद**
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
*E-mail:* vspublishershyd@gmail.com

**शाखा : मुम्बई**
जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
*E-mail:* vspublishersmum@gmail.com

**फ़ॉलो करें:**

© **कॉपीराइटः** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521501-5-1

**DISCLAIMER**

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

# प्रकाशकीय

जन विकास सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशक वी एण्ड एस पब्लिशर्स पुस्तक प्रकाशन की अगली कड़ी में अनिष्ट ग्रहों के निवारण तथा उसके ज्योतिषीय समाधान हेतु अपनी नवीनतम पुस्तक **'अनिष्ट ग्रह ज्योतिष-कारण व निवारण'** आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। आज के आधुनिक युग में समस्त मानव जाति कई प्रकार की चिन्ताओं से ग्रस्त है। लेकिन ज्योतिष विद्या द्वारा हम इन सभी समस्याओं का समाधान आसानी से किया जा सकता हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में मानव जीवन के कल्याण से जुड़े सभी प्रकार के समस्याओं के निवारण के लिए उचित सुझाव दिये गये हैं। पुस्तक के प्रथम तीन अध्याय में ज्योतिष, कर्म एवं भाग्य, वैदिक गणित के सिद्धान्तों के अनुसार लग्न ज्ञात करने की आसान विधि सहित जन्मकुण्डली की रचना तथा ग्रह एवं राशियों आदि के वर्णन हैं। इस पुस्तक में विशेष तौर पर मंत्र शक्ति, यंत्र बल, व्रत एवं उपवास, शुभ रत्न धारण करने की विधि, रुद्राक्ष फल अपने पास रखना, बीमार होने पर औषध स्नान की जानकारी एवं प्रसिद्ध लाल किताब पर अधारित साधारण टोटके का भी एक अध्याय अलग से दिया गया है। पुस्तक के चौथे अध्याय में जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में नवग्रहों की अभीष्ट एवं अनिष्ट ग्रहों की स्थिति एवं प्रभावों के बारे में जानकारी दी गयी है। ज्योतिष एवं ग्रह नक्षत्र जैसे जटिल विषय के होते हुए भी लेखक ने इस पुस्तक की भाषा सरल व सहज रखी है ताकि पाठकों को इसे समझने में परेशानी न हो।

यह पुस्तक धार्मिक कर्मकांडों में रुचि रखने वाले उन सभी महिला/पुरुषों को समर्पित है जो इस पुस्तक में लिखी विधियों का अनुसरण कर अपने जीवन की कठिनाइयों का समाधान पाना चाहते हैं। हमें आशा है कि यह पुस्तक पाठकों की सभी समस्याओं का समाधान कर उनके जीवन की राह को आसान बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

पाठकों से निवेदन है कि यदि पुस्तक में कही कोई त्रुटि रह गयी हो तो वे उसकी जानकारी हमें अवश्य दें।

धन्यवाद!

ॐ

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्॥

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरुमे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा॥

# समर्पण

**स्वर्गीय पिता श्री छाजूराम एवं**
**माता श्रीमती रामदेवी के श्री चरणों में,**
**जिनके आशीर्वाद और स्मृति मेरी प्रेरणा हैं।**

# विषय-सूची


***भूमिका*** **........................................... 9**

**1. ज्योतिष, कर्म और भाग्य ................ 11**

ज्योतिष क्या है? .................................. 11

ज्योतिष और कर्म ................................ 11

कर्म के प्रकार ....................................... 12

ज्योतिष की कार्यक्षमता ....................... 14

सुकर्म सौभाग्य/प्रारब्ध की कुन्जी ........... 14

**2. जन्मकुण्डली रचना ........................ 15**

जन्मकुण्डली क्या है? ........................... 15

वैदिक गणित विधि से लग्न ज्ञात करना ........ 15

वैदिक गणित विधि से लग्न ज्ञात करने का नियम ................................... 16

लग्न ज्ञात करने का उदाहरण ................ 16

उदाहरण कुण्डली-श्री प्रणव मुखर्जी ........ 17

ज्योतिषीय विवेचन ................................ 17

भावों के अन्तरसम्बन्ध ......................... 19

**3. ग्रह, राशि और नक्षत्र ....................... 21**

**(अ) सौरमण्डल के ग्रह ...................... 21**

1. ज्योतिष में नवग्रह व उनका विवरण .. 21
2. ग्रहों की श्रेणियाँ .......................... 26
3. ग्रह मित्रता, ग्रह दृष्टि व निष्फल ग्रह सारिणी ..................................... 27
4. ग्रहों की अवस्था ............................ 27
5. ग्रहों के शुभाशुभ योग सम्बन्धी नियम/सिद्धान्त ........................... 28
6. मेषादि द्वादश लग्नों में सूर्यादि नवग्रहों के शुभाशुभ योग ...................... 29
7. ग्रह गोचर, चन्द्र लग्न व शुभाशुभ भाव एवं सारिणी .................... 33

**(ब) ज्योतिष में 12 राशियाँ ............... 33**

1. राशि किसे कहते हैं? ...................... 33
2. नाम राशि, अंक, अक्षर, स्वामी ग्रहादि सारिणी ................................ 34
3. राशि विवरण-मेष से मीन तक बारह राशियों का विवरण ......................... 35

**(स) ज्योतिष में 27 नक्षत्र ................. 48**

1. नक्षत्र किसे कहते हैं? ...................... 48
2. नक्षत्र विवरण व श्रेणियाँ ................ 48
3. विशिष्ट पचहान वाले नक्षत्र ............. 49

**4. जन्मकुण्डली के द्वादश भाव ............ 51**

द्वादश भावों के नाम एवं विचारणीय विषय .................................................. 51

द्वादश भाव एवं विचारणीय विषय सम्बन्धी नियम/सिद्धान्त ......................... 53

भावों की राजयोग स्थिति के नियम/ सिद्धान्त .............................................. 53

भावों की प्रबल/निर्बल स्थिति बारे नियम/ सिद्धान्त ............................................. 54

महादशा/अन्तर्दशा में सत्यासत्य भावफल कैसे देखे? ........................................... 55

नक्षत्र आधारित ग्रहों के फल देने की महादशा वर्ष सारिणी ............................ 56

द्वादश भावों में नवग्रहों की अभीष्ट व अनिष्ट स्थिति ...................................... 57

1. प्रथम भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ............................... 58
2. द्वितीय भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ................................ 64
3. तृतीय भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ................................ 71
4. चतुर्थ भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ................................ 78
5. पंचम भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ................................ 85
6. षष्ठ भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ............................... 91
7. सप्तम भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ............................... 98
8. अष्टम भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ............................. 105
9. नवम भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति .............................. 112
10. दशम भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति .............................. 119
11. एकादश भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति .............................. 126
12. द्वादश भाव में नवग्रह अभीष्ट/ अनिष्ट स्थिति ............................ 134

**5. अनिष्ट नवग्रह शान्ति की अचूक उपाय शृंखला ................................. 143**

भारतीय ज्योतिष-एक पूर्ण विधि व्यवस्था ........................................... 143

1. मन्त्र शक्ति
   सूर्यादि ग्रहों के विशिष्ट मन्त्र एवं विधि ..................................... 143

अतिरिक्त शुभ कार्यों के विशिष्ट मन्त्र .. 155
नवग्रह बीज मन्त्र जपादि सारिणी .... 157
2. यन्त्र बल
सूर्यादि ग्रहों के विशिष्ट यन्त्र एवं उपयोग .......... 158
नवग्रह यन्त्र सारिणी .......... 159
ग्रह यन्त्रों का प्रभाव .......... 159
3. व्रत/उपवास लाभ कब, किस दिन, कैसे प्राप्त करें? .......... 161
अनिष्ट ग्रह वार, संख्या, व्रत/उपवास सारिणी .......... 162
4. साधारण वस्तु दान .......... 162
साधारण वस्तुदान सारिणी .......... 163
5. हवन/अनुष्ठान/यज्ञ-एक दृष्टि .......... 164
6. रत्न रहस्य .......... 165
1. शुभ रत्न-जीवन रत्न/पुण्य रत्न/भाग्य रत्न .......... 165
2. ग्रहों के रत्न, श्रेणियाँ व परख ... 166
3. अल्पमोली उपरत्न उनके लाभ ....169
4. लग्नानुसार ग्रह रत्न धारण करना व लाभ .......... 170
5. विशेष रोग/बीमारी एवं सम्बन्धित ग्रह रत्न .......... 176
6. विशेष रोगों/बीमारियों हेतु लाभकारी रत्न सारिणी .......... 177
7. रुद्राक्ष फल .......... 178
1. भारत में रुद्राक्ष .......... 178
2. रुद्राक्ष के प्रकार, पहचान व विशेषताएँ .......... 179
3. लग्नानुसार रुद्राक्ष निर्णय .......... 183
4. रुद्राक्ष के औषधीय उपयोग.... 187
5. राशि/ग्रह आधारित रुद्राक्ष लाभ सारिणी .......... 190
6. कार्यक्षेत्र/कार्यप्रकृति अनुरुप रुद्राक्ष सारिणी .......... 192

**6. भावानुसार ग्रहों के उपाय व उदाहरण .......... 193**

सूर्य ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 193
चन्द्र ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 195
मंगल ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 196
बुध ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 197
गुरु ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 199
शुक्र ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 200
शनि ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 201
राहु ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 202
केतु ग्रह के उपाय व उदाहरण .......... 203

**7. लाल किताब आधारित साधारण उपाय/टोटके .......... 205**

लाल किताब कब, कहाँ मिली और इसका प्रकाशन कब? .......... 205
अशुभ/अनिष्ट सूर्य के उपाय .......... 205
अशुभ/अनिष्ट चन्द्र के उपाय .......... 209
अशुभ/अनिष्ट मंगल के उपाय .......... 212
अशुभ/अनिष्ट बुध के उपाय .......... 215
अशुभ/अनिष्ट गुरु के उपाय .......... 218
अशुभ/अनिष्ट शुक्र के उपाय .......... 221
अशुभ/अनिष्ट शनि के उपाय .......... 225
अशुभ/अनिष्ट राहु के उपाय .......... 229
अशुभ/अनिष्ट केतु के उपाय .......... 232

**8. व्यक्ति का स्वास्थ्य, प्रमुख रोग व औषध स्नान .......... 237**

व्यक्ति का स्वास्थ्य .......... 237
शरीर रचना .......... 237
द्वादश भाव/राशि, शरीर के अंग व रोग..... 238
पुरुष व महिला के प्रमुख रोग .......... 238
रोगों के उपाय-औषध स्नान .......... 244
औषध स्नान हेतु जड़ी बूंटियों की सारिणी .......... 245
ग्रह सम्बन्धी विशिष्ट रोगादि भय सारिणी .......... 245

**9. कुछ विशिष्ट योगों/दोषों के उपाय .......... 247**

**(क) विवाह और वैवाहिक जीवन सम्बन्धी योग/दोष .......... 247**
1. गण, भकूट व नाड़ी दोष .......... 247
विवरण और अपवाद सम्बन्धी श्लोक ..248
2. मंगलीक दोष .......... 250
विवरण और परिहार सम्बन्धी श्लोक .253
3. सुखी विवाहित जीवन योग .......... 258

**(ख) स्वास्थ्य एवं धन सम्बन्धी योग व दोष .......... 259**
1. कालसर्प योग .......... 259
2. शनि की साढ़ेसाती और ढ़ैया/पनौती ..263
3. दीर्घायु जीवन व सौभाग्य योग .......... 266

**(ग) पितृ दोष व मातृ दोष .......... 268**
कारण व निवारण .......... 268

**(घ) सूर्यग्रहण/चन्द्रग्रहण दोष .......... 270**
कारण व निवारण .......... 270

**(ङ) चुनावी समर .......... 271**
जन्मकुण्डली में ग्रहयोग व उदाहरण 271
जीत/सफलता के ज्योतिषीय उपाय... 273

**(च) विदेश प्रवास**
सफलता के ज्योतिषीय उपाय .......... 274

**(छ) षोड़षोपचार सहित आसान हवन विधि .......... 275**

# भूमिका

नवीनतम शोध पत्रों के अनुसार शिक्षा प्रसार से समाज की दशा और दिशा में भारी परिवर्तन हुआ है। अब उच्च शिक्षा प्राप्त युवक/युवतियाँ धन की लालसा से अभिभूत, जीवनयापन के सुख साधनों की चाह में, अपने जन्म स्थान/निवास स्थान से दूर सेवारत हो, उनके एकत्रीकरण में लगे रहते हैं। उनमें स्वतन्त्र रहने की आदत भी पनपी है। फलतः एकाकी परिवार/लघु परिवार प्रथा का जन्म हुआ है। इससे समाज में विघटन, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, लड़ाई-झगड़े बढ़े हैं। इस प्रकार के दिन-प्रतिदिन बदलते सामाजिक परिवेश में आज प्रत्येक व्यक्ति अत्यधिक चिन्तित व दुःखी है। वह समाज में मान-सम्मान व प्रतिष्ठा दिलाने वाले आदर्शमय जीवन के सामाजिक मूल्यों को भूलता जा रहा है। ज्योतिष का एक मात्र उद्देश्य जन कल्याण है। ज्योतिष इन सामाजिक मूल्यों को बनाये रखने के लिये सुकर्म करने की प्रेरणा देता है। उनका पथ प्रदर्शन करता है और उन्हें उपाय भी सुझाता है, ताकि उनकी चिन्ता एवं दुःख दूर हो। उनका भविष्य उज्जवल हो। उनके जीवन में सुख-शान्ति का वास हो।

प्रस्तुत पुस्तक **"अनिष्ट ग्रह ज्योतिष - कारण व निवारण"** उपायों के संदर्भ में लेखक का एक लघु प्रयास है। पुस्तक के प्रारम्भिक तीन अध्यायों में प्रथम में-ज्योतिष, कर्म और भाग्य/प्रारब्ध, द्वितीय में-वैदिक गणित के नियमों/सिद्धान्तों के अनुसार लग्न ज्ञात करने की आसान विधि सहित जन्मकुण्डली रचना, तृतीय में-ग्रह, राशि और नक्षत्र का समुचित वर्णन है। अध्याय चतुर्थ में जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में नवग्रहों की अभीष्ट एवं अनिष्ट ग्रह स्थिति एवं प्रभाव दर्शाये गये हैं। अध्याय पंचम में अनिष्ट नवग्रह शान्ति की अचूक उपाय शृंखला दी गई है। इसमें मन्त्र शक्ति, यन्त्र बल, व्रत/उपवास लाभ, साधारण वस्तु दान, हवन/अनुष्ठान/यज्ञ-एक दृष्टि, रत्न रहस्य, रुद्राक्ष फल आदि का विस्तृत वर्णन है। अध्याय षष्ठ में भावानुसार अनिष्ट ग्रह उपाय व उदाहरण और अध्याय सप्तम में लालकिताब आधारित साधारण उपाय/टोटके भी दिये गये हैं। अध्याय अष्टम व्यक्ति के स्वास्थ्य, पुरुष/स्त्री के प्रमुख रोग व औषध स्नान आदि से सम्बन्धित है। अंतिम अध्याय नवम में (क) विवाह और वैवाहिक जीवन सम्बन्धी योगों/दोषों 1- गण, भकूट व नाड़ी दोष-अपवाद के श्लोक व निवारण के उपाय, 2- मंगलीक दोष-परिहार के श्लोक व निवारण के उपाय, 3- सुखी विवाहित जीवन योग (ख) स्वास्थ्य एवं धन सम्बन्धी योगों/दोषों 1-कालसर्प योग-कारण व निवारण, 2-शनि की साढ़ेसाति व

ढ़ैया–कारण व निवारण, 3–दीर्घायु जीवन व सौभाग्य योग (ग) पितृ दोष/मातृदोष व उपाय (घ) सूर्यग्रहण व चन्दग्रहण दोष व उपाय (ङ) चुनावी समर–जन्मकुण्डली में ग्रह योग व चुनाव में जीत/सफलता के ज्योतिषीय उपाय (च) विदेश प्रवास–सफलता के ज्योतिषीय उपाय और अन्त में (छ) षोड़शोपचार सहित आसान हवन विधि दी गई हैं। उदाहरणार्थ 24 कुण्डली और 18 सारिणियाँ दी गई हैं।

लेखक का विश्वास है कि ज्योतिषप्रेमियों को यह पुस्तक पसन्द आयेगी और अनिष्ट ग्रह दोष स्थिति में आवश्यक उपाय कर लाभान्वित हो सकेंगे। इस पुस्तक के सम्पादन कार्य में सहयोग के लिये सहधर्मिणी श्रीमती पार्वती देवी, मित्रगण श्री संजय गांधी व श्री दिनेश भारद्वाज का आभारी हूँ। कुण्डली निर्माण में सहयोग के लिये अपने पौत्र चिरंजीव आशीष भारती और कम्प्यूटर लेजर टाईप सेटिंग में श्री दिनेश गुप्ता का धन्यवाद करता हूँ। अन्त में प्रिय श्री साहिल गुप्ता, निदेशक, वी एण्ड एस पब्लिशर्स, एफ–2/16 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 के मिष्ठभाषी व्यवहार और पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन पर साधुवाद करता हूँ।

**मकर सक्रान्ति, 14 जनवरी, 2014**

लक्ष्मीनारायण शर्मा
म०न०–77, सेक्टर–10ए,
मोबाईल : 09911287445
गुड़गाँव–122001 (हरियाणा–भारत)
Email : lakshmi_parwati@yahoo.com

# अध्याय 1

## ज्योतिष, कर्म और भाग्य (Astrology, Deeds & Luck)

### ज्योतिष क्या है?

हिन्दू धर्म संस्कृति और सभ्यता के विकास में सर्वप्रथम 4 वेद, 18 पुराण और 1 महाभारत महाकाव्य का नाम आता है। यह तीनों एक प्रकार से वैज्ञानिक विधिपरक ग्रन्थ हैं। इनमें वेद जनसामान्य में आदर्शमय जीवन मूल्यों के संस्कार भरते हैं। उन्हें सुकर्म करते रहने की प्रेरणा देते हैं, ताकि वह जीवन में धर्मरत होकर, अर्थ एवं काम सुख आनन्दपूर्वक भली-भाँति भोगते हुये परम गति को प्राप्त हो। अतः वेद अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। वेद के 6 प्रमुख अंग हैं। इन 6 अंगों में ज्योतिष चतुर्थ अंग है। वेदों का यह चतुर्थ अंग ज्योतिष इन सब अंगों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह वेदों का वह अंग है, जो मोरशिखा और नागमणि के समान सदैव ही देदीप्यमान रहता है। इसे वैदिक ज्योतिष या भारतीय ज्योतिष के नाम से जाना जाता है। यह वेदों के विशाल ज्ञानभण्डार की देखभाल करता है। उनका लालन-पालन करता है। यही कारण है कि ***"ज्योतिषम् वेदानां चक्षुः"*** ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा गया है। यह हमारा सही पथ प्रदर्शन करते हैं। हमारी अज्ञानता के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश लाते हैं। वास्तव में नेत्र मानव शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। उनके द्वारा जड़, चेतन आदि सभी वस्तुएँ प्रत्यक्ष रूप से देखी जा सकती हैं। उनकी आकृति, प्रकृति, आयु, बल, कार्यशैली, परिणाम आदि का भली-भाँति अनुमान लगाया जा सकता है। ज्योतिष या फलित ज्योतिष के माध्यम से भी आकाश स्थित ग्रह-नक्षत्रों के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के भूत, वर्तमान और भविष्य के फलादेश को क्रमशः देखा, समझा और जाना जा सकता है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इनका अनुभव किया जा सकता है। ज्योतिष काल ज्ञान/काल विज्ञान है। इसके द्वारा मानव जीवन में होने वाले शुभाशुभ कर्मों के लेखा-जोखा का ठीक-ठीक अनुमान लगाया जा सकता है। शुभाशुभ कर्म से ही जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। मनुष्य के दुष्कर्म उसे गहरे गर्त में गिराते हैं, जबकि उसके अपने सुकर्म उसे ऊचाँईयों तक ले जाते हैं। ज्योतिष सदैव सुकर्म करने का मार्ग प्रशस्त करता है। वर्तमान में सुकर्म करने से पूर्व जन्म में किये गये पापकर्म भी धुल जाते हैं। अतः ज्योतिष और कर्म का परस्पर गहरा सम्बन्ध है।

### ज्योतिष और कर्म

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में वेद-पुराणों के पश्चात श्री मद्भागवतगीता और श्री रामचरितमानस

का विशेष स्थान है। श्री मद्भागवतगीता के द्वितीय अध्याय के 47 वें श्लोक में विष्णु के सोलह कला पूर्ण अष्टम अवतार श्रीकृष्ण युद्ध काल में अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं –***"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सक्तगोऽस्त्वकर्मणि॥"*** अर्थात् कर्म करना तुम्हारा अधिकार है, लेकिन उसके फल पर कभी नहीं। कर्म को फल की इच्छा से कभी मत करो तथा कर्म करने में कोई आशक्ति भी न हो। लक्ष्य तक पहुँचने के लिये अहंकाररहित कर्म करें, सुकर्म करें और फल के बारे में न सोचें। श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्री रामचरितमानस अर्थात् रामायण में लिखा है – ***"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहिं सो तस फल चाखा॥"*** अर्थात् कर्म को प्रधान माना है। कर्म के अनुसार ही हर जीव को फल मिलता है। अतः ज्योतिष के मूलभूत आधारों में व्यक्ति से सम्बन्धित उसके अपने कर्म ही होते हैं। उसके अपने कर्म ही उसका भाग्य या प्रारब्ध निश्चित करते हैं। सुकर्म व्यक्ति को आदर्श जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करते हैं और मोक्ष दिलवाते हैं। उसे सांसारिक झंझटों से मुक्ति मिल जाती है। ऐसे व्यक्ति के चेहरे पर सदैव तेज झलकता रहता है और वह प्रसन्न रहता है। उसका प्रकृति से सम्बन्ध जुड़ जाता है और ईश्वर में आस्था बढ़ जाती है। वह ईश्वर उपासना और धार्मिक कृत्यों में लीन रहता है। उसका पुनर्जन्म नहीं होता है। व्यक्ति के दुष्कर्म उसको 84 हजार योनियों का चक्कर लगवाते हैं। उसका एक के बाद दूसरा जन्म होता रहता है। पुनर्जन्म के कारण उसे अनेकानेक सम/विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। संघर्ष करना पड़ता है। वह मायामोह तथा कामवासना में उलझा रहता है। कष्ट उसे घेरे रहते हैं और वह सदैव ही दुःखी व चिन्तित रहता है। उसका जीवन एक प्रकार से नरक बन जाता है।

यद्यपि धर्म कर्म/सुकर्म आदर्शमय सुखी जीवन का प्रवेश द्वार है किन्तु आकाश मण्डल के ग्रह, नक्षत्र भी उसके दैनिक जीवन को प्रभावित करने में कोई चूक नहीं करते। कभी भी कोई भी प्राकृतिक आपदा आ सकती है। जून, 2013 में उत्तराखण्ड राज्य में केदारनाथ–बद्रीनाथ के समीप अचानक आई तेज वर्षा एवं बाढ़ ने हजारों धर्मयात्रियों एवं निवासियों की जान ले ली। भूस्खलन से भूमि, मकान, जीवनयापन का सामान, सड़क, वृक्ष सभी कुछ नष्ट हो गया। इसके अतिरिक्त गत वर्षों में विश्व के कितने ही देशों में समुद्री लहरों की प्राकृतिक आपदा से जन, धन और निवास की अत्यधिक हानि हुई। अनेक भूभाग नष्ट हो गये। एक प्रकार से सब कुछ नष्ट हो गया। इस प्रकार का यह विनाश व्यक्ति के कर्म दर्शाते हैं। अतः सर्वप्रथम कर्म को लेते हैं। किसी धर्माचार्य ने कहा भी है – ***"करे सुकर्म सदा मिल सारे। होय अहित न कभी हमारे॥"***

## कर्म के प्रकार

मनुष्य द्वारा किये जाने वाले कर्म तीन प्रकार के होते हैं – 1 संचित कर्म, 2 प्रारब्ध कर्म, 3 क्रियमाण कर्म। उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

### 1. संचित कर्म (Cumulative Deeds)

संचित कर्म वह सब कर्म होते हैं, जो पिछले जन्मों से अब तक संचित हो चुके

हैं और जिनका फल भोगना शेष है। इन कर्मों के सम्पादन में व्यक्ति का अपना कोई सक्रिय योगदान नहीं होता है। इनमें मौसम, वातावरण, आस-पड़ोस, समाज, देश, संगति, धर्म आदि का प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त इनमें असहाय अवस्था में, विवशता में, किसी दबाव में बेमन से किये गये कार्य भी शामिल होते हैं। ऐसे कर्म भाग्य का निर्माण नहीं करते हैं। वह निर्बल और हीनवीर्य होने के कारण स्वतः ही धीरे-धीरे नष्ट हो जाते हैं। इनके नष्ट होने में व्यक्ति द्वारा किये गये स्वाध्याय, देवदर्शन, कथा संकीर्तन, तीर्थयात्रा आदि का भी सहयोग होता है। यदि ऐसे शुभ कर्म व्यक्ति अपने जीवन में अपना लें, तो वह बलवान होकर भाग्य निर्माण में भी सक्षम हो उठते हैं और विनाश रुक सकता है।

### 2. प्रारब्ध कर्म (Destined Deeds)

प्रारब्ध कर्म सभी संचित कर्मों का वह भाग है, जो प्राणी को इस जन्म में भोगना होता है। यह स्वेच्छा से, जान-बूझकर और सक्रिय सहयोग से किये जाते हैं। इनका प्रारब्ध/भाग्य निर्माण में पूरा सहयोग होता है। यह शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इनका फल अवश्य मिलता है। जीवन में किये गये/किये जा रहे क्रूर कर्मों को भी नष्ट किया जा सकता है, यदि सुयोग्य, सज्जन, उच्चकोटि के प्राणी सच्चे मन से इस सम्बन्ध में प्रायश्चित करें। आत्मज्ञान द्वारा भी इन्हें भस्मीभूत किया जा सकता है। विलोम क्रिया द्वारा भी इन्हें नष्ट किया जा सकता है। सामान्य व्यक्ति भी सक्रिय प्रायश्चित करके या दण्ड विधान प्रक्रिया द्वारा इन्हें नष्ट कर लाभ उठा सकते हैं। इन सभी चेतनाओं से सामंजस्य बिठाने में कई-कई जन्म व्यतीत हो जाते हैं। इस घोर कलियुग में धर्म में आस्था ही क्रूर कर्मों के नष्ट होने का एक मात्र सहारा या सही विधान है। धर्म पर पूर्ण आस्था बनाये रखने और विश्वासपूर्वक चलने से क्रूर कर्म नष्ट हो सकते हैं। शान्ति और सुख मिल सकता है। प्रारब्ध/भाग्य बदल सकता है।

प्रारब्ध/भाग्य की तीन श्रेणियाँ कही गयी हैं। 1-प्रबल, 2-साधारण और 3-गौण। जब अनेक बार विचार करने पर एक ही घटना का संकेत हो, तो ऐसा समझें कि प्रारब्ध/भाग्य प्रबल है। कर्म का फल भोगना ही होगा। जन्म लेने के बाद के कर्म क्रियमाण कर्म द्वारा भी कर्मफल में परिवर्तन सम्भव है। सुकर्म करने पर इनका लाभ मिल सकता है।

### 3. क्रियमाण कर्म (Present Deeds)

जन्म लेने के बाद के कर्म क्रियमाण कर्म कहलाते हैं। इनका कारण व्यक्ति की भौतिक आवश्यकता, प्रतिक्रिया, बाह्य प्रेरणा, संकल्प आदि हो सकते हैं। ऐसे कर्म कायिक, वाचिक, मानसिक, ऐच्छिक, अनैच्छिक, व्यक्तिगत, सार्वजनिक, प्रकृतिसम या दैवी होते हैं। शारीरिक प्रवृत्ति का फल तो शीघ्र मिल जाता है, किन्तु मानसिक एवं ऐच्छिक कार्यों का फल मिलने में अधिक समय लगता है। ऐसे कर्म संचित और भाग्य/प्रारब्ध कर्मों का परिष्कार करने में समय लगाते हैं। मृत्युपर्यन्त अन्तिम स्थिति या शुद्ध लाभ को अगले जन्म के लिए बचा लेते हैं। यही उनका भाग्य/प्रारब्ध बन जाता है। व्यक्ति के वर्तमान कर्मों पर भूतकाल में किये गये कर्मों का प्रभाव तथा

भविष्य के कर्मों पर वर्तमान कर्मों का प्रभाव होता है। इस प्रकार व्यक्ति के कर्म एक शृंखला के समान घटित होते रहते हैं।

### ज्योतिष की कार्यक्षमता (Efficiency of Astrology)

सतयुग अर्थात् स्वर्णयुग, त्रेतायुग अर्थात् रजतयुग, द्वापर युग अर्थात् ताम्रयुग व्यतीत हुए कितनी ही शताब्दियाँ निकल गयी हैं। अब हम भौतिक संसार के चतुर्थ युग कलियुग अर्थात् लौहयुग में निवास कर रहे हैं। इस युग की भी बहुत-सी शताब्दियाँ चली गयी हैं। अब ऑटोमैटिक मशीनों का बोलबाला है। इस कलियुग में अब डिजिटल उपकरणों, यथा-मोबाइल, टेलीफोन, इण्टरनेट, टेलीविजन संस्कृति ने यह स्थान ले लिया है। वे पलक झपकते ही देश/विदेश के समाचारों से अवगत कराते हैं। तीव्रगामी अवागमन के साधन 24 घण्टे में दूर विदेश में रह रहे अपनों के पास पहुँचाते हैं। किन्तु आज का व्यक्ति भौतिक सुख-साधनों की लालसा, चमक-दमक और मायामोह के वशीभूत सत्य पथ से निरन्तर भटकता ही चला जा रहा है। सुकर्मों के स्थान पर कुकर्मों का बोलबाला है। प्रतिदिन भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार, व्यभिचार, बलात्कार एवं आतंकवाद के समाचार सुनने और पढ़ने को मिलते हैं। व्यक्ति की जन्मकुण्डली में बैठे अशुभ/अनिष्टकारी ग्रह ऐसे कुकर्म करने के लिये उसे प्रेरित करते हैं। ज्योतिष में इन कारणों को ढूँढ़ने की क्षमता व दक्षता है। साथ ही अशुभ/अनिष्टकारी ग्रहों के उपायों का प्रावधान भी है। उपाय अपनाने से अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव कम होता है। मन को संतोष, शान्ति व सुख मिलता है और सुकर्म करने का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

### सुकर्म सौभाग्य/प्रारब्ध की कुन्जी (Good Deeds-A Key to Good luck)

व्यक्ति की जन्मकुण्डली में ग्रहस्थिति, ग्रहदृष्टि, ग्रहयोग और ग्रहदशा आदि द्वारा उसके कर्मफल या भाग्य का लेखा-जोखा ज्योतिष के माध्यम से आसानी से जाना जा सकता है। यदि वह चाहे, तो वह अपना भाग्य वर्तमान कर्मों के द्वारा सुधार ले। भाग्य/प्रारब्ध का प्रभाव शरीर और मन पर पड़ता है। जब मन व्यथित और विचलित होता है, व्यक्ति दु:खी होता है तथा अन्दर ही अन्दर रोता है। किन्तु आत्मा चैतन्य है। उस पर कर्मों का कोई प्रभाव नहीं होता है। दुर्भाग्य को दूर करने के लिए ऊँचे पर्वत जैसी चढ़ाई चढ़नी होती है, जो कठिन है, किन्तु असम्भव नहीं है। भाग्य भूतकाल में किये गये कर्मों से बना है तथा वर्तमान कर्मों से भी प्रभावित हो रहा है, अर्थात् बन या बिगड़ रहा है। ऐसी स्थिति में दुर्भागी भी अपना रास्ता बदल ले और मन में सुकर्म करने का संकल्प लेना ठान ले, तो निश्चय ही दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल सकता है। उसे संतोषप्रद, आरामदायी एवं सुखमय जीवन का आनन्द मिल सकता है और वह समाज में प्रतिष्ठित हो सकता है। अत: कहा जाता है कि व्यक्ति के सुकर्म उसके सौभाग्य/प्रारब्ध की एक मात्र कुन्जी हैं।

# अध्याय 2

## जन्मकुण्डली रचना (Casting A Birth Chart)

### जन्मकुण्डली क्या है?

जन्मकुण्डली व्यक्ति के जन्म का एक आकाशीय मानचित्र या नक्शा होती है। यह आकाशीय मानचित्र जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदयरत राशि को आधार मानकर बनाया जाता है, इसलिए इसे राशि कुण्डली भी कहते हैं। इस राशि को लग्न राशि (Ascendent) कहा जाता है। इस लग्न राशि का बड़ा महत्त्व है। यह राशि जन्मकुण्डली के प्रथम भाव में स्थापित की जाती है। इसके पश्चात् घड़ी की सूईयों के प्रतिकूल क्रम में अन्य शेष 11 राशियाँ स्थापित कर दी जाती हैं। इस प्रकार भचक्र की कुल 12 राशियाँ 12 घरों/भावों में लिख दी जाती हैं। अन्त में जन्मकुण्डली को पूर्ण करने के लिए भाव स्थित राशियों में पंचांग में देखकर जन्म समय के समस्त 9 ग्रह रख दिये जाते हैं। जिस राशि में चन्द्र ग्रह होता है, वह राशि व्यक्ति की जन्म राशि कहलाती है। जन्म राशि के 9 अक्षरों में से जन्म के समय के नक्षत्र के चरणाक्षर के अनुसार व्यक्ति का नामकरण कर दिया जाता है। स्मरण रहे कि लग्न राशि के आधार पर कुण्डलियों में राशियों के क्रम बदलते रहते हैं, किन्तु भाव सदैव स्थिर रहते हैं। जन्मकुण्डली के साथ-साथ चन्द्र स्थित राशि/भाव को लग्न मानकर चन्द्रकुण्डली, सूर्य स्थित राशि/भाव को लग्न मानकर सूर्यकुण्डली और नवांश कुण्डली भी बना लेनी चाहिए। इससे फलकथन में सुविधा रहती है। आगे दी गयी उदाहरण कुण्डली संख्या-1 देखकर राशियों और भावों की अस्थिरता/स्थिरता का अनुभव करें।

### वैदिक गणित विधि से लग्न ज्ञात करना

यह जन्म लग्न ज्ञात करने की सर्वाधिक आसान विधि है। इस विधि से लग्न निकालने के लिए सम्बन्धित व्यक्ति के निम्नलिखित तीन आँकड़े इकट्ठे करने होते हैं। तत्पश्चात नीचे दिये हुये नियमानुसार वैदिक गणित विधि से लग्न ज्ञात करने की प्रक्रिया अपनाये।

1. अंग्रेजी जन्म तिथि (Calendar Date of Birth)
2. जन्म का मानक समय (Standard Time of Birth)
3. जन्म स्थान, राज्य, देश (Place of Birth, State and Country)

## वैदिक गणित विधि से लग्न ज्ञात करने का नियम

सर्वप्रथम अंग्रेजी जन्म तिथि को चौगुना करने के लिए 4 से गुणा करें। इस संख्या में नीचे दी गयी मास अंक सारिणी–क में अंकित जन्म मास की संख्या जोड़ें। पुनश्च जन्म के मानक समय की मिनट बनाकर उपरोक्त संख्या में मिनट की संख्या और जोड़ दें। कुल संख्या को नीचे दी गयी दूसरी लग्न राशि अंक सारिणी–ख में देखें। ख सारिणी में 1 से 1440 अंक दिये गये हैं। मीन राशि के नीचे दिये अंक 1420 से 76 को 1420 से 1440 एवं 1 से 76 पढ़ें। इस स्थिति में यह भी ध्यान रखें कि जन्म तिथि के चौगुने अंक, जन्म मास के अंक और जन्म के मानक समय के मिनट के अंक–तीनों का जोड़ 1440 से अधिक हो, तो कुल संख्या में से 1440 घटा दें और शेष अंक लग्न राशि अंक सारिणी–ख में देखें। जिस राशि अंक के मध्य यह संख्या हो, वह राशि व्यक्ति की जन्म लग्न है। उत्तर भारत पद्धति के अनुसार लग्न राशि को बीच शीर्ष में रखें तथा इसके बाद घड़ी की सूईयों के प्रतिकूल क्रम में शेष 11 राशियाँ रख दें। तत्कालीन पंचांग में देखकर राशियों में 9 ग्रह भी अंकित कर दें और ग्रह स्पष्ट निकाल लें। अब जन्मकुण्डली फलकथन के लिए तैयार है।

**अंग्रेजी मास अंक सारिणी–क**

| जन. | फर. | मार्च | अप्रैल | मई | जून | जुलाई | अग. | सित. | अक्टू. | नव. | दिस. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 726 | 850 | 960 | 1086 | 1208 | 1327 | 6 | 126 | 250 | 366 | 481 | 604 |

**लग्न राशि अंक सारिणी–ख**

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | 182 | 303 | 435 | 567 | 692 | 819 | 950 | 1084 | 1209 | 1320 | 1420 |
| से | से | से | से | से | से | से | से | से | से | से | से |
| 181 | 302 | 434 | 566 | 691 | 818 | 949 | 1083 | 1208 | 1319 | 1419 | 76 |

## लग्न ज्ञात करने का उदाहरण

इसके लिये सर्व प्रथम भारत के वर्तमान राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की लग्न ज्ञात करते हैं। विद्वान् ज्योतिषविद् के.एन. राव के अनुसार इनका जन्म–कांडी, जिला – मुर्शिदाबाद, राज्य – पश्चिमी बंगाल (भारत) में हुआ। तद्नुसार इनकी जन्म तिथि, जन्म समय व जन्म स्थान नीचे दिये जा रहे हैं।

(1) जन्म तिथि 01-02-1935, (2)जन्म समय 05-40 सायः, (3)जन्म स्थान कांडी–मुर्शिदाबाद (पश्चिमी बंगाल–भारत)।

उपरोक्त नियम अनुसार लग्न ज्ञात करना

| | |
|---|---|
| जन्म तिथि के अंक $1 \times 4$ | = 4 अंक |
| फरवरी मास के अंक | = 850 |
| जन्म के स्टैन्डर्ड समय की मिनट | = 1060 |
| कुल अंक | = 1914 |

**नोटः** कुल अंक 1440 से अधिक हैं। अतः 1440 घटाने पर 1914 - 1440 = 474 लग्न राशि अंक प्राप्त हुए। लग्न राशि अंक सारिणी में 474 अंक देखने पर कर्क राशि की लग्न (अंक 4) ज्ञात हुई।

## उदाहरण जन्मकुण्डली

**श्री प्रणव मुखर्जी (Example Birth Chart - Mr. Pranav Mukharjee)**

उदाहरण के लिए नीचे उत्तर भारत नमूने के अनुसार बनी भारत के वर्तमान राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की जन्मकुण्डली दी जा रही है। इसमें 12 भाव मौजूद हैं। वैदिक गणित विधि से इनकी लग्न कर्क राशि (अंक 4) की निकलती है। अतः कर्क राशि अर्थात् अंक 4 को प्रथम भाव/लग्न भाव में रखा है। लग्न अनुसार शेष अन्य राशियाँ 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 1, 2, 3 क्रमानुसार घड़ी की सूईयों के प्रतिकूल क्रम में आगामी भावों में रख दी हैं। स्मरण रहे, लग्न राशि अनुसार राशियों के क्रम बदलते रहते हैं, किन्तु भाव सदैव स्थिर रहते हैं। लग्न भाव को प्रथम भाव माना गया है। भाव/राशि कुण्डली बनाने पश्चात् तत्कालीन पंचांग देखकर भावों/राशियों में ग्रह रख दिये जाते हैं। इस प्रकार जन्मकुण्डली तैयार की जाती है। श्री प्रणव मुखर्जी की जन्मकुण्डली नीचे दी जा रही है। कुण्डली का नीचे ज्योतिषीय विवेचन भी दिया जा रहा है।

**जन्मकुण्डली**

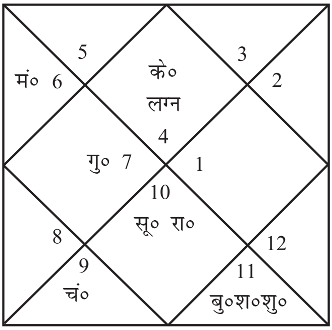


**नवांश कुण्डली**

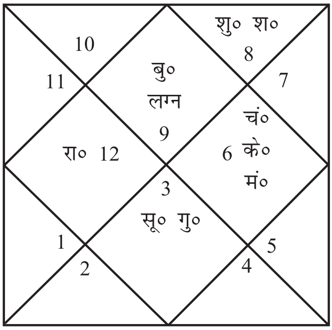


**कुण्डली संख्या-1**

## ज्योतिषीय विवेचन

यह राशि क्रम की चतुर्थ राशि कर्क राशि लग्न कुण्डली है। इसका स्वामी शुभ ग्रह चन्द्र है। यह एक भावना प्रधान, संवेदनशील और परिवर्तनप्रिय राशि है। इस लग्न वाले व्यक्ति बहुत ही आत्मविश्वासी, कल्पनाशील, बुद्धिमान्, बातूनी, ईमानदार, अपने परिवार-समाज से जुड़े एवं एक स्थान पर न टिकने वाले व्यक्ति होते हैं। राशि स्वामी चन्द्र इन्हें सदैव ही इनकी भावना एवं चेतना का बोध कराते रहते हैं। यह जन्मकुण्डली लम्बे समय से विजित होते आ रहे एक बंगाली सांसद, भूतपूर्व

रक्षामन्त्री, वितमन्त्री श्री प्रणव मुखर्जी की है। अब वह भारत के राष्ट्रपति पद पर विराजमान हैं।

## (1) सुदर्शन लग्न विचार

विद्वान् ज्योतिषविद् के.एन. राव के अनुसार इनका जन्म कांडी, जिला मुर्शिदाबाद, राज्य पश्चिमी बंगाल में हुआ। इस समय मिराती, जिला-बीरभूमि, राज्य-पश्चिमी बंगाल में रहते हैं। इनका जन्म कर्क लग्न में हुआ। जन्म लग्नेश चन्द्र गुरु की राशि धनु में षष्ठ भाव में, चन्द्र लग्नेश गुरु, शुक्र की राशि तुला में चतुर्थ भाव में और सूर्य लग्नेश शनि, अपनी मूल त्रिकोण राशि कुम्भ में अष्टम भाव में बैठे हैं। लग्न पर किसी भी लग्नेश की दृष्टि नहीं है। केवल लग्न कारक सूर्य सप्तम भाव से लग्न को देख रहा है, किन्तु राहु के साथ बैठे होने से प्रभावहीन स्थिति में है। चन्द्र भी षष्ठ भाव में बैठकर लग्न को कमजोर कर रहा है। नवांश कुण्डली में नवांश लग्नेश गुरु कारक सूर्य के साथ सप्तम भाव में बैठकर नवांश लग्न को देख रहा है। यह एक अच्छी स्थिति है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में गुरु चतुर्थ भाव में सुख भाव में केन्द्र में विराजमान है। इस बारे में यह श्लोक प्रसिद्ध है– ***"किंकुर्वन्ति ग्रहा सर्वे, यत्र केन्द्रा बृहस्पति।"*** ऐसी स्थिति में जन्म लग्न ही उचित प्रतीत होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्मे श्री प्रणव मुखर्जी शान्त स्वभाव वाले, कार्यकुशल, दूरदर्शी, परोपकारी, मित्रवान, धनवान, सुखी और अपने परिवार में भार्या को प्रथम स्थान देने वाले जातक हैं।

## (2) ग्रह स्थिति, ग्रह दृष्टि एवं ग्रह योग

चतुर्थ भाव में सुख भाव में शुभ ग्रह गुरु के केन्द्रस्थ होने की स्थिति के फलस्वरूप श्री प्रणव मुखर्जी भारत के राष्ट्रपति बने, अर्थात् भारत के प्रथम नागरिक बने। चन्द्र लग्न से मंगल ग्रह के दशम भाव में होने से उन्हें और अधिक बल मिला। मित्रों के सहयोग और स्वयं के अथक प्रयासों से राष्ट्रपति के पद पर विजित होकर प्रथम नागरिक बने और राष्ट्रपति पद की शपथ ली। तत्कालीन चल रही शनि की महादशा, शुक्र की अन्तर्दशा और चन्द्र की प्रत्यान्तर्दशा में उन्हें यह पद प्राप्त हुआ। कर्क लग्न में बैठे केतु ने भी इस दिशा में उन्हें एकाग्रचित होकर बुद्धिमानी से कार्यरत रहने में सहयोग दिया। ईश्वर में आस्था और धर्म पर अटल विश्वास रखने की प्रेरणा दी। फलस्वरूप राष्ट्रपति का उच्च पद प्राप्त हुआ। गुरु की अष्टम भाव एवं अष्टम भाव में बैठे अष्टमेश शनि पर, साथ में बैठे शुभ ग्रह शुक्र और बुध पर तथा द्वादश भाव पर पूर्ण दृष्टि ने वैराग्य त्रिकोण के 4, 8, 12 भावों का, अर्थात् मोक्ष भावों का ऐसा पारस्परिक सम्बन्ध एवं सन्तुलन स्थापित किया कि उनकी कमजोर स्थिति भी सुदृढ़ होती चली गयी और उनका राष्ट्रपति पद का शुभ मार्ग प्रशस्त हुआ। वह भारत के 13वें राष्ट्रपति और प्रथम नागरिक बने।

**( 3 ) उपसंहार**

उपरोक्त ग्रह स्थिति, ग्रह दृष्टि और ग्रह योगों से यह निष्कर्ष निकलता है कि जन्मकुण्डली में लग्न कारक सूर्य की लग्न पर दृष्टि एवं विशेषकर गुरु की केन्द्रस्थ स्थिति ने वैराग्य त्रिकोण के 4, 8, 12 भावों का, अर्थात् मोक्ष भावों का ऐसा सन्तुलन और अन्तरसम्बन्ध स्थापित किया कि उन्होंने राष्ट्रपति पद का चुनाव जीतकर भारत देश के राष्ट्रपति पद की बागडोर संभाली और देश में लोकप्रिय तथा विश्वविख्यात हुए। इस समय गोचरस्थ शनि चतुर्थ भाव में बैठे कर्म भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं और गुरु, केतु लाभ के एकादश भाव में बैठकर पंचम, सप्तम एवं नवम भाव भाग्य भाव को देख रहे हैं। समय लाभ एवं प्रगति का है, किन्तु उन्हें अपने विरोधियों/शत्रुओं से सदैव सतर्क रहना चाहिए। भारत के राजनीतिक इतिहास में उनका नाम दीर्घकाल तक अक्षुण्य रहेगा।

**नोटः** उपरोक्त विधि से पाठकगण भी अपनी जन्मकुण्डली तैयार कर सकते हैं और उसका फलकथन एवं सही विवेचन कर सकते हैं। फलकथन करते समय जन्म कुण्डली, नवांशकुण्डली में ग्रह स्थिति, ग्रह दृष्टि, ग्रह गोचर व ग्रह दशा पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। लग्न, लग्नेश, ग्रह वर्गोत्तम हो सकते हैं।

## भावों के अन्तरसम्बन्ध

श्री प्रणव मुखर्जी की उपरोक्त जन्मकुण्डली में भावों के अन्तरसम्बन्ध का वर्णन आया है। इस सम्बन्ध में भावों की महत्ता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। ग्रह, राशि, नक्षत्र की अपेक्षा भाव को प्रधान माना है। भाव सदैव स्थिर रहते हैं। चराचर स्थिति अनुसार जन्मकुण्डली के 12 भावों को निम्नलिखित तीनसमूहों में बाँटा गया है।

1. केन्द्र भाव–1, 4, 7, 10 भाव। इन्हें चर भाव कहा गया है।
2. पणफर भाव–2, 5, 8, 11 भाव। इन्हें स्थिर भाव कहा गया है।
3. अपोक्लीम भाव–3, 6, 9, 12 भाव। इन्हें द्विस्वभाव भाव कहा गया है।

पणफर का 5वाँ और अपोक्लीम का 9वाँ भाव त्रिकोण भाव कहलाते हैं। विशेष कारणों से केन्द्र भावों और त्रिकोण भावों को अत्यधिक शुभ व लाभ के भाव कहा गया है। यदि प्रत्येक केन्द्र भाव से त्रिकोण भावों को गिना जाये, तो कुण्डली में 4 त्रिकोण बनते हैं। तीन भावों से मिलकर एक त्रिकोण बनता है। जन्मकुण्डली के इन 12 भावों से बने 4 त्रिकोण धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष भावों के त्रिकोण कहलाते हैं। प्रत्येक त्रिकोणगत 3 भावों का परस्परगहरा सहसम्बन्ध/अन्तरसम्बन्ध हो सकता है। सामंजस्य की ऐसी स्थिति में यह तीनों भाव परस्पर अधिक लाभकारी होते हैं और एक-दूसरे को बल देते हैं। इन चार त्रिकोणों के नाम एवं विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

### 1. प्रथम त्रिकोण पुरुष त्रिकोण

प्रथम भाव से गिनने पर 1, 5, 9 भावों का त्रिकोण बनता है। इसे पुरुष त्रिकोण

कहते हैं। इस त्रिकोण के तीनों भाव धर्म के भाव कहलाते हैं। इन भावों से व्यक्ति के पौरुष, ऊर्जा, धार्मिक भावना, ईमानदारी, गुणवत्ता, नैतिकता, पवित्रता, ब्रह्मविद्या, पूजा-अर्चना, चिन्तन-मनन, ईश्वर में आस्था/विश्वास, दानपुण्य, बलिदान प्रवृत्ति की जानकारी होती है।

### 2. द्वितीय त्रिकोण ऐश्वर्य त्रिकोण

दशम भाव से गिनने पर 10, 2, 6 भावों का त्रिकोण बनता है। इसे ऐश्वर्य त्रिकोण कहते हैं। इस त्रिकोण के तीनों भाव अर्थ के भाव कहलाते हैं। इनभावों से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति यथा आय-व्यय, लाभ-हानि, नौकरी-व्यवसाय या व्यापार, जीवन स्तर, सुख-समृद्धि, मान-सम्मान, निष्ठा-प्रतिष्ठा, रोग-कष्ट आदि का आंकलन होता है।

### 3. तृतीय त्रिकोण प्रकृति त्रिकोण

सप्तम भाव से गिनने पर 7, 11, 3 भावों का त्रिकोण बनता है। इसे प्रकृति त्रिकोण कहते हैं। इस त्रिकोण के तीनों भाव काम के भाव कहलाते हैं। इन भावों से व्यक्ति की इच्छाओं, लालसाओं, विलासिता की वस्तुओं, सुख-सम्बन्धों, विवाहित जीवन के आनन्द, कामवासना, महत्त्वाकांक्षा, उच्चाधिकार प्रकृति का पता लगता है।

### 4. चतुर्थ त्रिकोण वैराग्य त्रिकोण

चतुर्थ भाव से गिनने पर 4, 8, 12 भावों का त्रिकोण बनता है। इसे वैराग्य त्रिकोण कहते हैं। इस त्रिकोण के तीनों भाव मोक्ष के भाव कहलाते हैं। इन भावों में व्यक्ति के प्रति माता का प्यार व माता द्वारा देखभाल, उसकी अपनी सूझ-बूझ, विचारधारा, निवास और वाहन सुविधा, आयु योग, दैवी ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, ईश्वरभक्ति और अन्त में मोक्ष/मुक्ति छिपी हैं।

शारीरिक संरचना बारे प्रथम भाव से देखना होता है। यदि ऐसी स्थिति में प्रथम भाव का पंचम और नवम भाव से सहसम्बन्ध/अन्तरसम्बन्ध होता है, तो कहा जा सकता है कि जातक शारीरिक रुप से बलिष्ठ होगा। इसी प्रकार मकान-वाहन बारे चतुर्थ भाव से, विवाह बारे सप्तम भाव से, नौकरी/व्यवसाय बारे दशम भाव से देखना होता है। यह सभी केन्द्र भाव है। यदि इनका सम्बन्ध अपने-अपने त्रिकोण भावों से हो जाये, तो ऐसा माना जायेगा कि ऐसा जातक इन सभी क्षेत्रों में सुखी व संतुष्ट होगा। अतः स्मरण रहे कि भावों के अन्तरसम्बन्ध बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं। सदैव लाभकारी होते हैं।

# अध्याय 3

## ग्रह, राशि और नक्षत्र
## (Planets, Signs of Zodiac & Constellations)

### सौरमण्डल के ग्रह (Solar System)

भौगोलिक दृष्टि से सौरमण्डल में सूर्य के अतिरिक्त कुल 9 ग्रह शामिल हैं। सूर्य को इन 9 ग्रहों का केन्द्र एवं जनक कहा गया है। सभी ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हुए अपने जनक सूर्य की परिक्रमा करते हैं। सूर्य से दूरी के अनुसार क्रमशः बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, अरुण, वरुण और कुबेर हैं। अरुण, वरुण, कुबेर हमारी पृथ्वी से सूई की नोंक जैसे दिखाई देते हैं। बुध, शुक्र सूर्य के अधिक नजदीक हैं। यही कारण है कि दोनों चमकदार हैं। सूर्य से 72 अंश से कम दूरी होने पर यह जल जाते हैं, अर्थात् अस्त हो जाते हैं। ग्रहों के पुनः उपग्रह भी होते हैं। चन्द्रमा हमारी पृथ्वी काउपग्रह है।

### ज्योतिष में नवग्रह व उनका विवरण (Planets Used in Astrology)

हम पृथ्वीवासियों पर ज्योतिष की धारणा के अनुसार सूर्य का प्रभाव पड़ता है। अतः ज्योतिष में सूर्य को पृथ्वी के स्थान पर एक प्रभावशाली ग्रह माना गया है। उपग्रह चन्द्रमा पृथ्वी के अधिक समीप है। उसका भी पृथ्वी व पृथ्वीवासियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अतः उसे भी एक ग्रह माना गया है। अरुण, वरुण और कुबेर पृथ्वी से बहुत दूर हैं। इनका प्रभाव नगण्य है। अतः भारतीय ज्योतिष में उन्हें छोड़ दिया गया है। पृथ्वी और चन्द्रमा के बीच कटान बिन्दुओं को राहु व केतु नाम से छाया ग्रह की मान्यता दी गयी है। राहु का स्थान उत्तर संपात पर और केतु का स्थान दक्षिण संपात पर है। इस प्रकार ज्योतिष में राहु, केतु सहित नवग्रहों को स्थान दिया गया है। फल कथन में इनको महत्त्व दिया जाता है।

### 1. सूर्य (Sun)

वैदिक संहिताओं में सूर्य को कश्यप गोत्र का क्षत्रिय और कलिंग देश का स्वामी कहा गया है। तद्नुसार यह सात घोड़ों के रथ पर सवार होकर सभी भुवनों की यात्रा करते हैं। भौगोलिक दृष्टि से सूर्य सभी ग्रहों का जनक है और उनका सम्राट है। सूर्य एक अग्नि तत्त्व क्रूर ग्रह कहलाता है। यह तृतीय श्रेणी का पापग्रह है। हिन्दू धर्म संस्कृति के अनुसार ऊषाकाल के समय यह सृष्टि रचयिता ब्रह्मदेव का भव्य प्रतिविम्ब लगता है। प्रातःकाल के पश्चात् सृष्टि पालनहार विष्णुदेव की

मनमोहक प्रतिमूर्ति प्रतीत होता है। सूर्यास्त, अर्थात् गोधूलि के समय सृष्टि विनाशक ताण्डवकारी महादेवसम दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि यह एक तेजस्वी, ओजस्वी, उदारहृदयी, आत्मविश्वासी, उच्च विचारों वाला ग्रह है, किन्तु सम्प्रभुताप्रिय, अहंकारी, उदण्ड और क्रोधी भी है। इसका क्रोध क्षणिक होता है। यह स्वतन्त्र विचारों से भरपूर अधिकारिक प्रवृत्ति वाला ग्रह है। शरीर पित्त प्रकृति वाला है। इसका सिद्धान्त है—हम अपना कार्य कैसे करें और दूसरों को कैसे निर्देशित करें। यह व्यक्ति को 21-22 वर्ष की आयु में अपनी दशा आने पर उच्च पद दिलाने, ऊँचाइयों तक ले जाने, भाग्यशाली बनाने में सहायता करता है। उसकी प्रगति-उन्नति व सफलता में चार चाँद लगाता है। यह आत्मा, पिता और बच्चों का अधिष्ठाता है। यह व्यक्ति को राष्ट्रपति, राज्यपाल, मन्त्री, नेता प्रशासनिक अधिकारी के पद तक पहुँचाता है। यह नेत्र, हृदय, और पेड़ू के ऊपरी भाग का संचालन करता है। दशम भाव में होने पर अधिक बलशाली होता है। इनके देवता कल्याणकारी/चक्रधारी भगवान विष्णु हैं। इनका शुभ रत्न माणिक्य है।

## 2. चन्द्र (Moon)

वैदिक संहिताओं में चन्द्र का अत्रि गोत्र है और यह यमुना के समीपवर्ती देश के स्वामी हैं। तद्नुसार यह दस घोड़ों के त्रिचक्र रथ पर सवार होकर सुमेरु की प्रदक्षिणा करते हैं। हिन्दू धर्म संस्कृति के अनुसार चन्द्र को सूर्य साम्राज्ञी की उपाधि भी दी गयी है। यह तृतीय श्रेणी का शुभ ग्रह है। भौगोलिक दृष्टि से यह हमारी पृथ्वी का उपग्रह है और जल तत्त्व, शीतल एवं शान्त ग्रह है। इसमें मातृत्व के सभी गुण पाये जाते हैं, यथा—प्रेम-प्यार, समझने की शक्ति, देख-रेख का दायित्व आदि। यह मास के दो सप्ताह बढ़ता जाता है। यह अपनी रोशनी से रिझाता है और उजाला लाता है। बाद के दो सप्ताह घटता जाता है। अन्धियारा लाता है। अमावस की रात घोर अंधेरे की रात होती है। यह मिष्ठभाषी, व्यवहारकुशल और मानवता के प्रति समान भाव रखने वाला ग्रह है, किन्तु अत्यधिक भावुक, कल्पनाशील और निष्क्रिय ग्रह है। यह कफकारी और वायुविकारी प्रकृति वाला ग्रह है। इसका सिद्धान्त है—हम कैसे अनुभव करें और दूसरों को प्रत्युत्तर कैसे दें। यह 23-24 वर्ष की आयु में अपनी दशा आने पर व्यक्ति के सौभाग्य और सफलता की वृद्धि करता है। यह व्यक्ति की बाह्य प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह समुद्रतट नियन्त्रक, जलयान निर्माता, दर्शनशास्त्री और प्रकृतिविज्ञानी तैयार करता है। इसका फेफड़ों पर नियन्त्रण होता है और मन-मस्तिष्क को प्रभावित करता है। चन्द्र सूर्य के साथ होने पर निष्प्रभावी होता है। इनके देवता भोलेभण्डारी भगवान शिव हैं और इनका शुभ रत्न मोती है।

## 3. मंगल (Mars)

वैदिक संहिताओं में मंगल को भारद्वाज गोत्र का क्षत्रिय और अवन्ति देश का स्वामी कहा गया है। इनका वाहन मेष है। मंगल ग्रह को सेनापति का स्थान दिया गया

है। कहा जाता है कि दैवी प्रकोप से जब एक बार पृथ्वी जलमग्न हो गयी, तो समुद्र मन्थन के समय विष्णुदेव ने पृथ्वी को समुद्र से निकाला और तब मंगल ग्रह का जन्म हुआ। भौगोलिक दृष्टि से यह लाल रंग का कान्तिमान एवं अग्नि तत्त्व ग्रह है। हिन्दू धर्म संस्कृति ग्रन्थों में इस प्रकार का वर्णन मिलता है। यह द्वितीय श्रेणी का पापग्रह है। यद्यपि यह एक निडर, साहसी, सुदृढ़, स्वतन्त्रता सेनानीसम ग्रह है, किन्तु स्वार्थी, आवेगी, कठोर, निर्दयी और रात में सेंध मारकर चोरी करने वाला चोर भी है। यह सदैव ही विजयी होना पसन्द करता है। यह पित्त प्रकृति वाला ग्रह है। इसका सिद्धान्त है–हम कार्य को कैसे सम्पादित करें और कैसे पूरा करें। यह व्यक्ति को निडर, साहसी, उत्साही और ऊर्जावान बनाता है। यह व्यक्ति को 27–28 वर्ष की उम्र में अपनी दशा आने पर जीवनयापन के सभी सुख प्रदान करता है। यह पुलिस या फौज में सिपाही/ अधिकारी, यान्त्रिक अभियन्ता, खिलाड़ी, पहलवान जैसे पद दिलाता है। यह खोपड़ी, खून व टेस्टीकल्स पर राज करता है। यह द्वितीय भाव में निष्प्रभावी होता है। इनके देवता पवनपुत्र/रामभक्त हनुमान जी है और इनका शुभ रत्न मूँगा है।

### 4. बुध (Mercury)

वैदिक संहिताओं में बुध का अत्रि गोत्र है और इन्हें मगध देश का स्वामी कहा गया है। तद्नुसार इनका वाहन सिंह है। भौगोलिक दृष्टि से सूर्य के अधिक निकट होने से इसे राजकुमार का दर्जा दिया गया है। यह चतुर्थ श्रेणी का शुभ ग्रह है। यह बुद्धिमान, विद्वान् और आविष्कारक प्रवृत्ति का पृथ्वी तत्त्व ग्रह है। यह देश/प्रदेश में सूखा, बाढ़, भूकम्प आदि लाता है। यद्यपि एक राजनयिक, कूटनीतिज्ञ, कार्यकुशल, परिवर्तनशील, बहुमुखी योग्यता वाला, सूचना देने में सदैव तत्पर स्वभाव वाला ग्रह है, किन्तु एक प्रकार से समालोचक, व्यंगकार, अशान्त और ड़रपोक भी है। व्यक्ति को सुयोग्य, शिक्षित और विद्वान् बनाता है। यह कफ, पित्त, वात्कारी प्रकृति का ग्रह है। इसका सिद्धान्त है–हम कब, कैसे, क्या सोचें-विचारें और बोलें। यह व्यक्ति को 33–34 वर्ष की उम्र में अपनी दशा आने पर बुद्धिमान् और ज्ञानवान् बनाता है। व्यक्ति को उच्च पद दिलाता है। व्यक्ति के सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाता है। यह इन्द्रियों, स्मरणशक्ति, मन–मस्तिष्क अर्थात् भेजा, त्वचा अर्थात् चमड़ी और भुजाओं की देखरेख करता है। यह पुस्तक प्रकाशक, सम्पादक, सुवक्ता, परिवहन व्यवस्थापक बनाता है। यह सूर्य के अधिक निकट होने से अर्थात् 72 अंश कम दूरी होने पर अस्त हो जाता है अर्थात् जल जाता हैं व निष्क्रिय हो जाता है। यह चतुर्थ भाव में निष्प्रभावी होता है। इनकी देवता सिंहवाहिनी माँ देवी दुर्गा हैं। इनका शुभ रत्न पन्ना है।

### 5. गुरु (Jupiter)

वैदिक संहिताओं में गुरु को अंगिरा गोत्र का ब्राह्मण और सिंधु देश का स्वामी कहा

गया है। तद्नुसार यह कमल पर आसीन हैं। गुरु ग्रह को देवताओं का गुरु, अर्थात् सुरगुरु कहा गया है। भौगोलिक दृष्टि से यह सूर्य के बाद सबसे बड़ा ग्रह है। यह प्रथम श्रेणी का आकाश तत्त्व शुभ ग्रह है। गुरु शास्त्रविद्यानिपुण होता है। यह व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ बनाने में सहायता करता है। यह एक आस्तिक, अर्थात् ईश्वरभक्त ग्रह है। यद्यपि यह न्यायप्रिय, गुणवान, स्वच्छताप्रेमी, आशावादी, देखरेख करने वाला तथा एक अच्छा सलाहकार है, किन्तु यह अति आसक्त, अति आंकिक, धीमी गति से कार्य करने वाला, आरामपसन्द, अपव्ययी ग्रह भी है। यह कफकारी प्रकृति का ग्रह है। इसका सिद्धान्त है–हम कैसे जानें, समझें और प्रगति पथ पर अग्रसर हों। यह व्यक्ति के शैक्षिक विकास में सहयोगी की भूमिका निभाता है। यह व्यक्ति को 16 से 20 वर्ष की किशोरावस्था उम्र में ही अपनी दशा आने पर बुद्धिमान् और विद्वान् बनाता है। प्रगति पथ पर ले जाता है। इससे व्यक्ति के सौभाग्य की वृद्धि होती है। इस ग्रह का कोर्ट, कचहरी, प्रशासन, जनसामान्य, शिष्टाचार, धार्मिक अनुष्ठान, विदेश यात्रा आदि पर पूर्ण नियन्त्रण है। यह सुयोग्य शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश, वैज्ञानिक, लेखक, पुजारी/पादरी जैसे व्यवसाय दिलाता है। यह पीठ, कूल्हे और पैर पर नियन्त्रण रखता है। इनको प्रभावित एवं परिचालित करता है। यह पंचम भाव का कारक ग्रह है, किन्तु पंचम भाव में होने पर निष्प्रभावी होता है। इनके देवता जल में कमलासीन सृष्टि रचियिता ब्रह्मा जी हैं। इनका शुभ रत्न पीत पुखराज है।

### 6. शुक्र (Venus)

वैदिक संहिताओं में शुक्र को भृगुगोत्रीय ब्राह्मण और भोजकट देश का स्वामी कहा गया है। तद्नुसार यह श्वेत कमल पर विराजमान हैं। शुक्र ग्रह को दानवों का गुरु, अर्थात् असुरगुरु माना जाता है। भौगोलिक दृष्टि से यह बुध ग्रह के अधिक समीप है। यह द्वितीय श्रेणी का शुभ ग्रह है। यह अति आकर्षक और चमकीला जल तत्त्व ग्रह है। यह व्यक्ति को धनवान बनाता है और जीवनयापन की सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। यह वर्षा के मार्ग में अवरोधी की भूमिका निभाता है। यह शिव का उपासक है। यह मृत्युसंजीवनीविद्याजनित ग्रह है। यह निर्जीव को सजीव कर सकता है। मृत व्यक्ति को जीवन दे सकता है। यह बहुत ही शिष्ट, विनम्र, उदार, सन्तुलित, शान्तिप्रिय, कालविज्ञानी और सामाजिक सद्भाव रखने वाला ग्रह है, किन्तु आलसी, अकर्मण्य, आनन्दप्रेमी, सुख चाहने वाला एक चतुर–चालाक ग्रह है। यह कफ, पित्त प्रकृति वाला ग्रह है। इसका सिद्धान्त है– हम खुश कैसे रहें और प्रीति–प्यार भरे परस्पर सम्बन्ध कैसे स्थापित करें। यह 25–26 वर्ष की उम्र में अपनी दशा आने पर व्यक्ति के आनन्द प्रवाह में वृद्धि करता है और सुख–सुविधाओं का प्रबन्ध करता है। यह व्यक्ति की नृत्य कला, गीत–संगीत प्रवृत्ति, प्यार और कामुकता में भी वृद्धि करता है तथा उसकी सुन्दरता, स्वच्छता एवं चरित्र पर दृष्टि रखता है। यह व्यक्ति को कवि, लेखक, अभिनेता, नृत्यकार, गीतकार, संगीतकार, ज्योतिषी, चिकित्सक,

मोटरगाड़ी अभियन्ता जैसी नौकरी करने के लिए उकसाता है। यह व्यक्ति के चेहरे, गुर्दे और मूत्र सम्बन्धी गुप्तांगों पर पूर्ण नियन्त्रण रखता है। यह षष्ठ एवं सप्तम भाव में होने पर निष्प्रभावी होता है। इनकी देवता साक्षात धन की देवी माँ लक्ष्मी जी हैं। इनका शुभ रत्न बहुमूल्य हीरा है।

## 7. शनि (Saturn)

वैदिक संहिताओं में शनि को कश्यप गोत्रीय शूद्र और सौराष्ट्र देश का स्वामी कहा गया है। इनका वाहन गीध है। हिन्दू धर्म संस्कृति के अनुसार शनि को सूर्य का पुत्र कहा गया है। भौगोलिक दृष्टि से भी यह सूर्य से टूटकर बने पिण्ड का एक हिस्सा है। यह अपने पिता सूर्य से शत्रुता रखता है। यह प्रथम श्रेणी का पापग्रह है। इसको यमराज अर्थात् मृत्युदेव के नाम से भी पुकारा जाता है। यह योगी/संन्यासी/सन्तों का पालनहार है। शनि शुभ भाव/राशि में बैठा हो, तो व्यक्ति को जीवनयापन की सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। उसे ऊँचाइयों तक ले जाता है और सफलता दिलाता है। यह एक विश्वसनीय, परिरक्षित और परिनिर्मित ग्रह है, किन्तु थका देने वाला, शुष्क, परिश्रमप्रिय, प्रतिबन्धित ग्रह भी है। यह वात प्रकृति वाला वायु तत्त्व ग्रह है। इसका सिद्धान्त है–हम अपने को कैसे दिखायें और जिम्मेदारियाँ निभाते हुये अपने जीवन को कैसे चलायें। यह व्यक्ति को 35-36 वर्ष की उम्र में अपनी दशा आने पर सौभाग्यशाली बनाने और सुख-समृद्धि दिलाने में सहयोगी की भूमिका निभाता है। यह दीर्घायु करता है और मृत्यु भी देता है। यह दुश्मनी बढ़ाता है और राजनीति में ले जाता है। अच्छा सरकारी पद भी दिलाता है। समस्त गैसीय उपकरणों/इलेक्ट्रोनिक उपकरणों के उत्पादन में सहायता करता है। यह एक अच्छा किसान, राजनेता, वकील, मन्त्री, वैद्युतिकी उपकरण व्यवसायी बनाता है। व्यक्ति के विवाह में रुकावट लाता है। इनके देवता भगवान श्री वटुक भैरव जी हैं और इनका शुभ रत्न कीमती नीलम है

## 8. राहु (North Node of Moon)

वैदिक संहिताओं में राहु को पैठानीस गोत्रीय शूद्र और मलय देश का स्वामी कहा गया है। इनका वाहन भी बुध के समान सिंह है। भौगोलिक दृष्टि से यह चन्द्रकक्षीय पथ और पृथ्वी के घूर्णन के मध्य का उत्तरी विच्छेद बिन्दु है। इसे उत्तर संपात कहा जाता है। यह शरीर रहित एक सिर है। यह धुएँ जैसे मटमैले-नीले रंग का ग्रह है। इसे शनिवत् ग्रह की संज्ञा दी गयी है। यह भावस्थित राशि स्वामी के परिणाम परिलक्षित करता है। इसके परिणामस्वरूप ग्रहण भी पड़ते हैं। इससे कुछ देर के लिए पृथ्वी पर अंधेरा छा जाता है। यह चतुर्थ श्रेणी का पापग्रह है। यह नवनिर्माण, जाँच-पड़ताल, भौतिक प्रगति, विदेश यात्रा कराने वाला ग्रह है, किन्तु अव्यवस्था फैलाने वाला, विश्वासघाती, धोखेबाज एवं हानिकारक ग्रह है। कभी-कभी अचानक गुप्त धन भी दिलाता है। यह वात प्रकृति वाला ग्रह है। इसका सिद्धान्त है–हम अपने चरित्र और

चाल–चलन को कैसे छिपायें। यह प्रगति और सफलता दिलाने हेतु व्यक्ति को उत्साहित करता है और 41–42 वर्ष की उम्र में अपनी दशा आने पर धन संग्रह कराने में सहायता करता है। इसकी दशा में शुभ/अशुभ दोनों प्रकार के प्रभाव परिलक्षित होते हैं, यथा–लाटरी से धन मिलना, दुर्घटना होना, हृदयघात, पक्षाघात आदि बीमारियाँ होना। यह त्रिषडाय, अर्थात् 3,6,11 भावों में शुभ और लाभकारी होता है। कभी–कभी केन्द्र और त्रिकोण भावों में होने पर भी अच्छा फल देता है। इनके देवता भी श्री वटुक भैरव जी हैं और इनका शुभ रत्न गोमेद है।

### 9. केतु (South Node of Moon)

वैदिक संहिताओं में केतु को जैमिनी गोत्रीय शूद्र और कुशद्वीप का स्वामी कहा गया है। इनका वाहन शनि के समान गीध है। भौगोलिक दृष्टि से यह चन्द्रकक्षीय पथ और पृथ्वी के घूर्णन के मध्य का दक्षिणी विच्छेद बिन्दु है। इसे दक्षिण संपात कहा जाता है। यह सिर रहित एक शरीर है। यह भी धुएँ जैसे मटमैले–नीले रंग का ग्रह है। यह चतुर्थ श्रेणी का पापग्रह है। यह गिद्धयान पर सवारी करता है। इसे मंगलवत् ग्रह की संज्ञा दी गयी है। इसके परिणाम भाव स्थित राशि स्वामी के अनुसार होते हैं। यद्यपि यह उच्च अनुकूलन, अत्यधिक अन्तर्ज्ञान, अध्यात्मिक प्रवृत्ति वाला और दूसरों की पहचान कराने वाला ग्रह है, किन्तु अव्यवस्थित, अकारक, अस्थिर एवं अविश्वसनीय ग्रह भी है। यह मोक्ष मार्ग की ओर ले जाता है। ईश्वरभक्ति में ध्यानमग्न होने की प्रेरणा देता है। यह वात प्रकृति वाला ग्रह है। इसका सिद्धान्त है–हम अपने को कैसे पहचानें और अपने आदर्शों/सिद्धान्तों को कैसे उजागर व आलोकित करें। यह व्यक्ति को 47–48 वर्ष की उम्र में अपनी दशा आने पर सुख व शान्ति का जीवन प्रदान करता है। इस स्थिति में व्यक्ति प्रसन्नचित्त और ध्यानमग्न होता है। कभी–कभी यह व्यक्ति को झगड़ालू बनाता है। विक्षिप्त अवस्था की स्थिति भी उत्पन्न करता है। व्यक्ति परिवार/समाज से परे ईश्वरभक्ति में लीन रहता है, ताकि मोक्ष मिल सके। यह त्रिषडाय, अर्थात् 3, 6, 11 भावों में होने पर शुभ और लाभकारी परिणाम देता है। कभी–कभी केन्द्र और त्रिकोण भावों में होने पर भी सुखप्रद होता है। इनके देवता बुद्धिप्रदायक श्री गणेश जी हैं और इनका शुभ रत्न लहसुनिया है।

## ग्रहों की श्रेणियाँ (Types of Planets)

सभी 9 ग्रहों को दो श्रेणियों में बाँटा गया है। इनके नाम शुभ या सौम्य ग्रह और अशुभ या पापग्रह हैं। इनका विवरण निम्नलिखित है।

### 1. शुभ या सौम्य ग्रह (Benefics)

पूर्ण चन्द्र (Waxing Moon), बुध, शुक्र, गुरु क्रमशः अधिकाधिक शुभ ग्रह हैं। यह 1, 2, 4, 5, 7, 9, 10 और 11 भावों में अत्यधिक शुभ, लाभकारी व मंगलकारी होते हैं और 3, 6 भावों में धीमी गति से लाभ पहुँचाते हैं। शेष 8, 12 भावों में होने पर हानिकर व अनिष्टकारी होते हैं।

## 2. अशुभ या पापग्रह (Malefics)

सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु क्रमशः अधिकाधिक अशुभ ग्रह या पापग्रह हैं। क्षीण चन्द्र (Waning Moon), भी पापग्रहों की श्रेणी में आता है। उपरोक्त पापग्रहों के साथ बुध भी पापग्रह बन जाता है। अधिकांशतः हानिकर व कष्टदायी होते हैं। केवल 8वें और 12वें भाव छोड़कर शेष भावों में कभी-कभी थोड़ा लाभ भी देते हैं। नीचे सूर्यादि ग्रहों के मित्रग्रहों, शत्रुग्रहों, समग्रहों, ग्रहदृष्टि, निष्फल ग्रह की सारिणी देखे।

### ग्रह मित्रता, ग्रह दृष्टि व निष्फल ग्रह सारिणी

| ग्रह | मित्रग्रह | शत्रुग्रह | समग्रह | ग्रहदृष्टि | निष्फल ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | गुरु, मंगल, चन्द्र | शुक्र, शनि, राहु | बुध | 7वें भाव पर | सूर्य चन्द्र युति भाव में |
| चन्द्र | सूर्य, बुध | राहु, केतु | मंगल, गुरु, शुक्र, शनि | 7वें भाव पर | - |
| मंगल | चन्द्र, गुरु, सूर्य | बुध, राहु | शुक्र, शनि | 4थे, 7वें, 8वें भाव पर | 2रे भाव में |
| बुध | राहु, शुक्र, सूर्य | चन्द्र | मंगल, गुरु, शनि | 7वें भाव पर | 4थे भाव में |
| गुरु | सूर्य, चन्द्र, मंगल | बुध, शुक्र | शनि, राहु | 5वें, 7वें, 9वें भाव पर | 5वें भाव में |
| शुक्र | बुध, शनि, राहु | सूर्य, चन्द्र | मंगल, गुरु | 7वें भाव पर | 6ठे व 7वें भाव में |
| शनि | बुध, शुक्र, राहु | सूर्य, चन्द्र, मंगल | गुरु | 3रे, 7वें, 10वें भाव पर | 7वें भाव में |
| राहु | शुक्र, शनि, बुध | सूर्य, चन्द्र, मंगल | गुरु | 5वें, 7वें, 9वें भाव पर | - |
| केतु | शुक्र, शनि, बुध | सूर्य, चन्द्र, मंगल | गुरु | 5वें, 7वें, 9वें भाव पर | - |

## ग्रहों की अवस्था (Planetary Position)

ग्रहों की निम्नलिखित दस अवस्था होती हैं। इनका मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ग्रह पीड़ित (Unhappy) और विकल (Uneasy) होने पर निष्फल एवं प्रभावहीन होते हैं।

**1. दीप्त (Bright)** जब कोई ग्रह उच्च राशि का होता है, दीप्त अवस्था कहलाती है। ऐसी अवस्था में वाहन सुख, मान-सम्मान, यश-प्रतिष्ठा, धन लाभ, संतान सुख मिलता है। शत्रुजयी करता है।

**2. स्वस्थ (Healthy)** जब कोई ग्रह स्वराशि का होता है, स्वस्थ होता है। ऐसा ग्रह प्रतिष्ठा और धन लाभ दिलाता है। वंश की वृद्धि होती है।

**3. मुदित (Happy)** जब कोई ग्रह मित्र राशि में होता है, मुदित कहलाता है। शुभ व लाभकारी होता है। आनन्द व संतोष मिलता है। शत्रुजयी व भोगी करता है।

**4. शान्त (Favourable)** जब कोई ग्रह वर्ग विशेष (होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश आदि) में शुभ स्थान पर होता है, शान्त अवस्था में मंगलकारी होता है। कार्य सिद्ध करता है। धर्मात्मा, विद्वान और मन्त्री बनाता है।

**5. शक्त (Powerful)** जब कोई ग्रह वक्री होता है, शक्त कहलाता है। स्वास्थ्य हानि व धनहानि कराता है। शुभ भाव में होने पर लोकप्रिय, कीर्तिवान एवं धनवान करता है।

**6. पीड़ित (Unhappy)** हम जानते हैं कि प्रत्येक राशि 30 अंश की होती है। जब कोई ग्रह राशि के प्रथम 3 अंश तक या अंतिम 3 अंश तक अर्थात् 0 अंश से 3 अंश और 28 अंश से 30 अंश पर होता है, तो वह पीड़ित होता है। ऐसा ग्रह निष्फल व प्रभावहीन होता है। शत्रुपीड़ा, बन्धुवियोग लाता है। प्रवासी बनाता है।

**7. दीन (Helpless)** जब कोई ग्रह शत्रु राशि में होता है, दीन कहलाता है। ऐसा ग्रह धनहानि कराता है। पाप कर्म करने को प्रेरित करता है। मान-सम्मान व प्रतिष्ठा को गिराता है।

**8. खल (Bad)** जब कोई ग्रह नीच राशि में होता है, तो वह खल (दुष्ट) कहलाता है। यह कष्टकारी होता है। झगड़ा, मुकदमा, जेल, धनहानि कराता है और मानसिक तनाव लाता है। चिन्ताओं में वृद्धि करता है।

**9. विकल (Uneasy)** जब कोई ग्रह जल जाता है अर्थात् Combust हो जाता है, तो वह विकल होता है। ऐसी स्थिति सूर्य के साथ होने पर आती है। सूर्य की उष्णता से ग्रह जल जाते हैं। चन्द्र 12 अंश, मंगल 17 अंश, बुध 13 अंश, गुरु 11 अंश, शुक्र 9 अंश, शनि 15 अंश का अन्तर होने पर जल जाते हैं। सामान्यत: 3 अंश अन्तर होने पर ही ग्रह प्रभावहीन व निष्फल हो जाते हैं। व्यक्ति को आचरणहीन, दरिद्री व घुमक्कड़ बनाते है।

**10. भयभीत (Fearful)** जब कोई ग्रह तीव्र गति से चल रहा हो और दूसरों से आगे निकलने की कोशिश में हो, तो यह भयभीत स्थिति होती है। इसके दुष्परिणाम होते हैं। व्यक्ति को पराजित और बलहीन करते हैं। ऐसा ग्रह धनहानि कराता है और पीड़ा देता है।

## ग्रहों के शुभाशुभ योग सम्बन्धी नियम/सिद्धान्त

1. कुण्डली में ग्रह स्वराशि में शुभ/अच्छा, मूलत्रिकोणराशि में अधिक शुभ/अधिक अच्छा, उच्चराशि में उत्तम/श्रेष्ठ व नीचराशि में अशुभ फल देते हैं।